प्र.1 काव्य लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली ? आपकी रचना प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए ।

बचपन से ही मुझे साहित्य के प्रति अनुरोध है और काव्य के प्रति मुझे विशेष रुचि रही । मेरी प्रेरणा के दो स्त्रोत रहें : एक परम पूज्य गुरुजी एवं भाई साहब पंडित ललितकिशोर शर्मा और दूसरी मेरी असह्य पीड़ा ।

रचना प्रक्रिया के बारे में मेरा अनुभव है कि काव्य रचना के पूर्व मस्तिष्क में अनेक प्रकार के भावों का प्रस्फुटन होता है और जब लिखना प्रारम्भ करती हूँ तब अनायास ही काव्य सर्जन होता है ।

प्र.2 आपकी प्रिय रचना कौन सी है ? क्यों ? उसका मूल्यांकन कीजिए ।

किसी भी रचनाकार को अपनी सभी रचनाएँ प्रिय होती है मुझे भी मेरी सभी रचनाएँ प्रिय हैं । जैसे माँ को अपने सभी बच्चे प्रिय होते हैं परन्तु प्रिय रचना का उल्लेख करना अनिवार्य ही है तो "ओ मेरे चिर नूतन परमपुरुष" यह रचना मुझे अत्यन्त प्रिय है । इसके पीछे कुछ कारण है । एक गहन अनुभूति के पश्चात् इस काव्य का सर्जन हुआ । पूरी सृष्टि में व्याप्त विराट पुरुष अर्थात् परब्रह्म स्वरूप परमात्मा के तेजोमय रूप की मुझे अनुभूति हुई उसे ही मैंने इस काव्य में शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है ।

प्र.3 काव्य विषय के बारे में आपका रुझान कृपया स्पष्ट कीजिए ।

मैं आस्थावादी हूँ । मैं अपनी कविताओं में मूल्यों के विघटन की बात नहीं करती वरन् स्वस्थ जीवन मूल्यों के प्रति आदर अभिव्यक्त करना चाहती हूँ । मैंने अपनी रचनाओं में जन-मन की अंतर वृत्तियों की रहस्यमयता को मूर्त रूप देकर यथार्थ जीवन स्थितियों की जटिलता को प्रतिकात्मक रूप से अभिव्यक्ति दी है । मेरी कविताओं की विशिष्टता है - अभिव्यक्ति की स्पष्टता । इससे इसमें व्यक्त विविध संदर्भों को ग्रहण करने में काव्य पढ़नेवालों को बौद्धिक व्यायाम नहीं करना पड़ता । कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से युगीन परिस्थितियों के साथ चलना मेरा उद्देश्य है । अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों संदर्भों में चिंतन सूत्रों को समझकर और उनके मूल स्वर को पहचानकर छायावादी, प्रगतिवादी एवं आधुनिक काव्य में निहित मूलभूत एकता को मैंने रेखांकित करना चाहा है ।

प्र.4 आधुनिक काव्य के बारे में आपका विचार प्रस्तुत कीजिए ।

वर्तमान भौतिकवादी यांत्रिक युग में लोक जीवन की द्वन्द्वयुक्त भावनाओं एवं जटिल मनोभावों की अभिव्यंजना के लिए नये कथ्य के नये रूप की आवश्यकता है । अतः इसके लिए मुक्त छंद ही उपयुक्त है । आधुनिक काव्य बौद्धिकता एवं चिंतन के बोझ से बोझिल होने के कारण हृदय को स्पर्श करने में प्रायः अक्षम रहता है । फलतः पाठक काव्य पढ़ने के पश्चात् प्रसन्न होने की अपेक्षा थकान सी महसूस करता है । कभी-कभी तो उसके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता ।

प्र.5 काव्य के भविष्य के बारे में आपका मंतव्य ।

आधुनिक काव्य का भविष्य उज्जवल है । भौतिकवादी, अति गतिशील, यांत्रिक युग का प्रभाव आज के कवि पर पड़ना स्वाभाविक है क्योंकि वो जिस समाज में रहता है उससे प्रभावित होगा ही । आज के कम्प्युटर युग में कविताएँ भी सूक्ष्म होती जा रही है क्योंकि मनुष्य के पास समय का अभाव है और उसका जीवन यंत्र सा हो रहा है । फलतः अधिकांश आधुनिक समकालीन कविताओं में व्यक्त विविध सन्दर्भों के ग्रहण करने के लिए पाठकों को बौद्धिक व्यायाम करना पड़ता है । दूसरी ओर मीडिया के प्रभाव से भी लोग अत्यधिक प्रभावित है । इसके कारण लोग साहित्य की ओर से उदासीन हो रहे हैं और वाचन-पाठन की प्रवृत्ति कम होती जा रही है । दूसरी ओर कवि भी कविता की अपेक्षा कहानियाँ, क्षणिकाएँ, हंसिकाएँ, हाइकु, व्यंग्य आदि लिखने की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं । फिर भी मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह दौर भी खत्म होगा और भविष्य में लोकमानस काव्य कृतियों की ओर उन्मुख होगा क्योंकि जब तक इस संसार में मनुष्य है काव्य प्रवृत्ति ऋग्वेद काल से चली आई है, चलती रही है, चलती रहेगी, कभी क्षीण जलधारा के रूप में, कभी वेगवती गंगा के रूप में ।

.....

प्र. 1 काव्य लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली ? आपकी रचना प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए ।

मुझे काव्य लिखने की प्रेरणा प्रकृति सौंदर्य, गिरते नैतिक मूल्य, समाज में घटित विभिन्न घटनाएँ और विषम सामाजिक परिस्थितियों से मिली । मैंने अंतः स्फूरण से लिखना शुरू किया । जब कभी मेरा मन आन्दोलित हुआ तब मेरी रचनाओं का सर्जन हुआ है ।

प्र. 2 आपकी प्रिय रचना कौन सी है ?

मेरी प्रिय रचना "यहाँ कमरे में मैं हूँ", "खुली खिड़की की बहार", है । जिसे मैंने मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान कमरे की खिड़की से दूर तक नजर आते हुए प्रकृति सौन्दर्य पर लिखी ।

प्र. 3 काव्य के प्रति आपका रुझान कृपया स्पष्ट कीजिए ।

काव्य के प्रति मेरा रुझान प्रकृति सौन्दर्य, सामाजिक विषमता के कारण नारी उत्पीडन तथा समसामयिक समस्याओं के कारण हुआ ।

प्र. 4 आधुनिक काव्य के बारे में आपका विचार प्रस्तुत कीजिए ।

आधुनिक काव्य प्रकृति से हटकर मानव जीवन के उतार-चढ़ाव में सिमटकर रह गया है । आज के संघर्षपूर्ण जीवन के प्रकृति कहीं खो गई है । काव्य प्रक्रिया सरल और संक्षिप्त होती जा रही है । आज की कविताएँ गज़लमय होती जा रही है । आधुनिक काव्य छांदस-अछांदस दोनों रूपों में मिल रहा है । हमें भविष्य में अच्छा साहित्य देना चाहिए । दूरदर्शन के कारण कवि सम्मेलन कम हो गए हैं ।

प्र. 5 काव्य के भविष्य के बारे में आपका मंतव्य ।

मैं मानती हूँ कि आधुनिक काव्य भविष्य में और प्रगति करेगा । मीडिया के द्वारा भी कवि सम्मेलनों, मुशायरों के द्वारा उसका प्रचार और प्रसार हो रहा है । जिससे कविता के प्रति लोगों का आकर्षण हो सकता है ।

टाइटल सांग उज्ज्वल भविष्य समाज को ऐसा देना चाहिए जो इन कवियों को सामाजिक ढांचे से तालमेल बिठा सके । लोगों को देश के प्रति प्रेरित करती हुई रचनाएँ होनी चाहिए ।

.....

उपसंहार :

विषय चयन से लेकर समय अवधि एवं प्रश्नावली के माध्यम से मैंने प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पूर्ण रूप से प्रामाणिकता प्रदान करने का प्रयास किया है । मैंने करीब डेढ़ सौ वर्ष के बहुत ही विशाल फलक पर काम किया है । परिणामतः इस शोध प्रबंध में मैंने मुख्य एवं गौण अर्थात् उभरते कवियों को भी यथा-योग्य स्थान देने का प्रयत्न किया है ।

प्रस्तुत शोध में हिन्दी भाषा के विकास के सम्बन्ध में राजनैतिक, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों का उल्लेख किया है । साथ ही धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का हिन्दी के विकास में जो योगदान रहा उसका सुन्दर एवं सरल ढंग से विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में आधुनिकता तथा हिन्दी साहित्य के गुजरात में विकास के लिये जो परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ जिम्मेदार रही उसका यथायोग्य विवेचन किया गया है ।

शोध प्रबन्ध के परिणाम स्वरूप हमें 300 से भी अधिक कवि गुजरात के अन्तर्गत मिलते हैं । उनमें कुछ दिवंगत है तो कुछ विद्यमान हैं । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मैंने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को न्याय देने का पूर्णतः प्रयास किया है । तृतीय अध्याय की विशिष्टता है प्रश्नावली । प्रश्नावली की फलश्रुति की दृष्टि से मैं यह कह सकती हूँ कि इन 32 प्रश्नों के अन्तर्गत मैंने किसी भी कवि के अन्तरंग एवं बहिरंग व्यक्तित्व को उन्हीं के शब्दों से वाचा दी है जो प्रामाणिकता की कसौटी पर खरा उतरता है । अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि इस प्रश्नावली के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से मैंने इन विद्यमान कवियों के काव्य के प्रति विचार, देश एवं समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण, काव्य में लय का स्थान, मानवता संबंधी उनके विचार, राजनीति एवं काव्य संबंधी उनका मंतव्य, उनकी काव्य रचना प्रक्रियाआदि के द्वारा उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को उन्हीं की भाषा से उभारने का प्रयास किया है जो एक नया एवं सुन्दर प्रयोग है ।

काव्य समाज का दर्पण है । इस बात को हम नकार नहीं सकते, क्योंकि इस दिशा के अध्ययन के पश्चात् मैं यह कह सकती हूँ कि गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य समाज का सही रूप में प्रतिबिम्ब है । आज समाज में हमें जो प्रवृत्तियाँ देखने को मिल रही है आधुनिक साहित्य में वे सभी प्रवृत्तियाँ विद्यमान है । जैसे दलित चेतना, दहेज

मशीनी युग की विभिषिकाएँ आदि । इस प्रकार भाव-पक्ष के अन्तर्गत हमें अत्याधुनिक प्रवृत्तियाँ मिलती है ।

शिल्प विधान की ओर यदि हम गौर करें तो यह कहा जा सकता है कि सभी उपकरणों के सुनियोजन से गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य अत्यन्त उर्वर है । प्राचीन काव्य में अलंकार, छंद आदि का प्रयोग प्रचुर मात्रा में दृष्टिगत होता था । किन्तु आज के काव्य की विशेषता है कि हमें बिम्ब प्रतीक विधान, मानवीकरण, व्यंग्य चेतना, मीथ, आदि का विशेष रूप से प्रयोग मिलता है । इसका एक कारण भाषा पर प्रभुत्व भी हम कह सकते हैं । आज छंदस एवं अछंदस दोनों प्रकार की रचनाएँ हमें मिलती है । साथ ही गद्य एवं पद्य रचनाएँ भी उपलब्ध है । यह भी आधुनिक काव्य की एक विशेषता ही है, अर्थात् नई-नई भंगिमाओं के प्रदान के कारण आधुनिक हिन्दी काव्य आज महत्वपूर्ण स्थान का हकदार बना है ।

काव्य रूपों पर एक नजर डालेंगे तो हम इस बात से मुँह नहीं मोड़ सकते कि आज महाकाव्यों, खंड काव्यों, प्रबंध काव्यों जैसे बड़े और मुक्तक, हाइकु, क्षणिकाएँ जैसे लघु-काव्य भी हमें मिल रहे हैं अर्थात् निष्कर्ष रूप में मैं यह कह सकती हूँ कि गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य काव्य-रूपों की दृष्टि से आज भी प्रगति के पथ पर अग्रसर है । आज नये-नये कवि नई-नई प्रवृत्तियों के साथ उभर रहे हैं, उनका भविष्य उज्जवल है ।

सातवें अध्याय में साक्षात्कार के द्वारा मैंने पूरे शोध प्रबन्ध को प्रामाणिकता प्रदान की है । इस शोध प्रबंध की यह एक और विशेषता है । मैंने यहाँ उन कवयित्रियों के साक्षात्कार किये हैं जो गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य के सशक्त हस्ताक्षर माने जाते हैं । जिनका भविष्य उज्जवल हैं और उन्हीं के योगदान से गुजरात के हिन्दी साहित्य का भविष्य भी उज्जवल है ।

सारांशतः मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य सारे भारत की और विशेष कर गुजरात की अनेकविद् गतिविधियों का सच्चा दर्पण है ।